काव्यांस
जुद्ध

सत्यप्रकाश जोशी

कवि–परिचै

सत्यप्रकाश जोशी आधुनिक राजस्थानी काव्य–परंपरा रा महताऊ कवि रैया है। आपरौ जनम 20 मार्च, 1926 नै जोधपुर में पंडित मोहनलाल जोशी रै घरै हुयौ। साहित्य अर संगीत साधना रा संस्कार आपनै आपरै परिवारिक परिवेस सूं मिळ्या। आप जसवंत कालेज जोधपुर सूं हिन्दी में अेम.अे. करी। सन् 1943 में द्वितीय विश्वजुद्ध री परिस्थितियां नै ध्यान में राखतां आप अेक कविता लिखी– 'जय होगी उनकी ही रण में'। आपरी आ पैली कविता कैयी जा सकै। इण कविता नै जोधपुर राज कानीं सूं पुरस्कार दिरीज्यौ। घर सूं मिळ्या राजस्थानी भासा रा संस्कार, लोकगीतां अर भजनां रा चाव आपनै राजस्थानी कांनी मोड़ दियौ अर आप राजस्थानी में रचना करणी सरू कर दी। सत्यप्रकाश जोशी री कवितावां में इणी कारण लोकसैली रौ प्रभाव ई देख्यौ जा सकै। पढ़ाई पूरी हुयां आप नौकरी सारू बम्बई गया, उठै सूं पाछा आय रूपायन संस्थान, बोरूंदा में काम संभाळ्यौ, पण सेवट आप पाछा बम्बई जाय पूग्या अर उठै अेक कालेज में प्राध्यापक री नौकरी करी। उठै रैवता थकां ई राजस्थानी भासा अर साहित्य री सेवा करता रैया। उठै सूं ईज आप 'हरावळ' नांव री राजस्थानी पत्रिका भी प्रकासित करी। सेवानिवृत्ति पछै आप जोधपुर अर अमेरिका रैया अर 26 अप्रेल, 1990 नै आपरौ सुरगवास जयपुर में हुयौ।

कवि सत्यप्रकाश जोशी री साहित्य साधना बेजोड़ रैयी है। आपरी छः पोथियां छप्योड़ी है, जिकी इण भांत है – 1. सहस्त्रधारा (1956) 2. राधा (1960) 3. दीवा कांपै क्यूं (1962) 4. बोल भारमली (1974) 5. गांगेय (1985) 6. सोन मिरगला। इणरै अलावा आपरी केई कवितावां, निबन्ध अर गद्य रचनावां रा अनुवाद भी छप्योड़ा है। कवि सत्यप्रकाश जोशी री 'बोल भारमली' काव्यकृति नै केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली सूं राजस्थानी रौ पुरस्कार मिळ्यौ। सत्यप्रकाश जोशी री रचनावां री विसेसतावां वांरी भासा री सहजता, संगीतात्मकता अर लयबद्धता है। सबदां रौ विसेस प्रयोग अर वांरी आंट आपरी भासा नै फूठरी बणावै।

पाठ–परिचै

सत्यप्रकाश जोशी री रचनावां में 'राधा' अेक विसेस रचना है। सहस्त्रधारा रचना में तौ हिन्दी री कवितावां ई ही, पण 'राधा' राजस्थानी री पैली न्यारी पोथी कैयी जा सकै। इण रचना में 20 खण्ड है, जिका इण भांत है – मुरली, पैला पैल, पूजा, दरसण, पिणघट माखण, बदनांमी, तिरस, गोरधन, ब्याव, रास, रूसणौ, होळी, बिदा, ओळूं, रूकमणीजी, घनस्यांम, विजोग, पालणौ, जुद्ध। कृष्ण भक्ति परम्परा में 'राधा' नै कृष्ण री प्रेमिका तौ स्वीकार करीज्यौ ईज है पण इण रै साथै–साथै वा आद्या शक्ति रौ अवतार ई मानीजी है। राधा अर कृष्ण आदर्श प्रेमी है, जठै कोई काम रौ भाव नीं है, यानी भक्ति परंपरा में अेक दूजा रा पूरक मान्या है। अलेखूं गद्य–पद्य रचनावां आं दोनूं रै प्रेम नै लेय'र लिखीजी है। राजस्थानी काव्य परंपरा भी इण सूं

अछूती नीं है। आधुनिक राजस्थानी काव्य परम्परा री आ रचना राधा अर कृष्ण रै प्रेम नै नूंवै सरुप में सांम्ही लावै, बालपणै रै प्रीत री ओळूं सांम्ही लायीजी है, पण जद राधा सुणै कै कृष्ण री फौज जुद्ध सारु व्हीर हुई है तो वा संदेश भेजै कै थारी फौजां नै रोक, जुद्ध मत कर। राजस्थानी काव्य में जुद्ध में मरणौ अमरता रौ प्रतीक मानीज्यौ या इणनै 'मरण पर्व' कहीज्यौ है, पण अठै कवि अेक नूंवै सुर में जुद्ध रौ विरोध करता थकां जुद्ध री विभीषिका रौ वरणाव करै। राधा, कृष्ण नै जुद्ध करण सूं रौकै। धरम, समाज, संस्कृति अर मिनखीचारै सारू जुद्ध कितरी हाण पुगावण वाळौ हुय सकै, कवि इण बात नै राधा काव्य रै इण 'जुद्ध' खंड में समझावण रौ प्रयास कर्‌यौ है। मानखै नै जुद्ध सूं विरत करण वाळौ औ संदेस मानवतावादी संदेस कैयौ जाय सकै, जिकौ कवि आपरी इण कविता रै माध्यम सूं देवणी चावै।

जुद्ध

मन रा मीत कांन्हा रे–
कुण थारा दोयण कुण रे सैण,
राता लोयण क्यूं बांकी भूंहड़ी!
धारण क्यूं करिया रे कड़ियाळ,
छोड्या पीतांबर क्यूं रे सोहणा!
सीस बचावण क्यूं सिरत्राण,
मोड़ क्यूं उतार्‌या मोर पंख रा!
मुरली रै बदळै कर कोदंड,
चिरमी री माळा आगी क्यूं धरी!

मन रा मीत कांन्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
भाई पर भाई करसी वार,
आपस में लड़सी, मरसी मांनखौ।
चुड़ला फोड़ैला काळा ओढ़,
अमर सुहागण थारी गोपियां।
कांमणियां बिकसी बीच बजार,
कुण तौ उघड़ी बै'नां नै ढांकसी।
पिरथी पुरखां सूं होसी हीण,
टाबर कहासी बिना बाप रा।
कुण करसी धीवड़ियां रौ ब्याव,
कुण तौ कडूंबौ वांरौ पाळसी!
अणगिण मावड़ियां देसी हाय,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

मन रा मीत कांन्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
कुण तौ बणासी सतखंड मै'ल,
कुण तौ चिणासी मैड़ी माळिया!
कुण तौ उगेरै मीठा गीत,
कुण तौ बांचैला पोथी पांनड़ा!
कुण करसी गोखड़ियां में जोत,
कुण तौ मांडैला आंगण मांडणा!
कुण तो मनावै वार तिंवार,
कुण तौ तुळछां गवरां नै पूजसी!
अणपूज्या सात्यूं सिंझ्या देव,
कुण तौ करसी रे मिंदर आरती!
मिटता जीवण री थनै आंण,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

मन रा मीत कांन्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
कोयल कुरळासी बागां मांय,
नाचता थमसी बन में मोरिया।
चीलां मंडरासी हरियै खेत,
गीधण भंवैला सगळै देस पर।
डाकणियां रमसी रात्यूं रास,
चौसठ जोगणियां खप्पर पूरसी।
धरती माता रौ लागै स्राप,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

मन रा मीत कांन्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
भातौ लै भंवसी रे भतवार,
हाळी जद लड़वा जासी खेत में।
हळ री हळवांणी बणसी सैल
खुरपी सुरां री जड़ियां बाढसी।
मुड़दां री लोथां रौ निनांण,
लोई री पांणत व्हैसी रेत में।
कांमेतण देसी थनै गाळ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

मन रा मीत कांन्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
जमना में लोई रै'सी नीर,
माटी रै' जासी लाखां बोटियां।
बस्ती में घावां रिसता सूर,
लूला लंगड़ा बण थनै भांडसी।
अणघड़ रै' जासी सगळी भोम,
ऊजड़ विरंगी होसी कोटड़ियां।
क्यूं मेटै रखवाळां रौ नांव,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

मन रा मीत कांन्हा रे–
आजा रे दूधां धोल्यां हाथ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।
गोरस माखण सूं रंगल्यां होठ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।
आजा गोरी नै भरलै बाथ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।
आजा रे पिणघट करल्यां बात,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।
आजा रे ओज्यूं रमल्यां रास,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

दोयण=दुस्मण। सैण=हेताळू, आत्मीय। लोयण=आंख्यां, नैण। कर=हाथ। कोदंड=धनुस। घमसांण=जुद्ध, घमासाण। धीवड़ियां=बेटियां। कडूंबौ=परिवार। गोखड़ियां=झरोखा, गोखा। कुरळासी=कूकसी, रुदन करसी। भंवैला=मंडरासी। सैल=भाला। लोई=खून। बोटियां=सरीर रा टुकड़ा। भांडसी=भूंडसी, बुराई करसी।

सवाल

विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. कवि सत्यप्रकाश जोशी रौ जलम कठै हुयौ?
   (अ) बीकानेर (ब) जोधपुर
   (स) बूंदी (द) कोटा
   ( )

2. कुणसी पोथी सत्यप्रकाश जोशी री नीं है–
   (अ) दीवा कांपै क्यूं (ब) बोल भारमली
   (स) सोन मिरगला (द) लीलटांस
   ( )

3. 'जुद्ध' कविता रौ अंस कुणसी पोथी सूं लिरीज्यौ है–
   (अ) राधा (ब) गांगेय
   (स) दीवा कांपै क्यूं (द) सोन मिरगला
( )

4. जुद्ध कविता संदेस देवै–
   (अ) जुद्ध रौ (ब) बैराग रौ
   (स) सान्ति रौ (द) संन्यास रौ
( )

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. सत्यप्रकाश जोशी री पैली कविता किसी मानीजै?
2. सत्यप्रकाश जोशी री किण रचना माथै केन्द्रीय साहित्य अकादमी सूं पुरस्कार मिळ्यौ।
3. राधा जुद्ध करणै सूं किणनै बरजै?
4. कृष्ण मोरपंख क्यूं उतार दिया?

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. सत्यप्रकाश जोशी री किणी चार रचनावां रा नांव बतावौ।
2. ''टाबर कहासी बिना बाप रा'', राधा आ बात क्यूं कैवै?
3. जुद्ध कविता में कृष्ण री पोसाक में कांई बदळाव दरसाईज्यौ है?
4. जुद्ध कविता में लोक–संस्कृति रा कुणसा चितराम दरसाईज्या है?
5. ''मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।'' राधा रै इण कथन में उणरौ कुणसौ रूप परतख हुवै?

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. राधा जुद्ध री विभीषिका रौ वरणाव किण भांत कर्यौ है? विस्तार सूं समझावौ।
2. ''राधा काव्यकृति सांति अर मिनखपणै रौ संदेस देवै।'' इण कथन नै विगतवार समझावौ।
3. सत्यप्रकाश जोशी री साहित्य–साधना माथै निबन्ध लिखौ।
4. 'जुद्ध' कविता रौ सार आपरै सबदां में लिखौ।
5. नीचै दिरीजी कविता–ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) मन रा मीत कान्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
भाई पर भाई करसी वार,
आपस में लड़सी, मरसी मांनखौ।
चुड़ला फोड़ैला काळा ओढ़,
अमर सुहागण थारी गोपियां।
कांमणियां बिकसी बीच बजार,
कुण तौ उघड़ी बै'नां नै ढांकसी।
पिरथी पुरखां सूं होसी हीण,
टाबर कहासी बिना बाप रा।

(ब) मन रा मीत कांन्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
कोयल कुरळासी बागां मांय,
नाचता थमसी बन में मोरिया।
चीलां मंडरासी हरियै खेत,
गीधण भंवैला सगळै देस पर।
डाकणियां रमसी रात्यूं रास,
चौसठ जोगणियां खप्पर पूरसी।
धरती माता रौ लागै स्राप,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

120

काव्यांस
मानखौ

गिरधारी सिंह पड़िहार

कवि–परिचै

गिरधारी सिंह पड़िहार राजस्थानी भासा रा ख्यातनांव साहित्यकार हुया है। आपरौ जनम सं. 1976 री सावण बदी 4 नै बीकानेर मांय हुयौ। आप मून धारयोड़ा अेक लूंठा रचनाकार हा। आपरी काव्यकृति 'जागती जोतां' 1960 मांय सांम्ही आई। इण पोथी रै कारणै आप इकताळीस बरसां री उमर में ई सिरमौर कवि रै रूप में ई थापित होया। आपरौ खंडकाव्य 'मानखौ' सन् 1964 में छप्यौ। गिरधारी सिंह पड़िहार रौ शैक्षणिक दायरौ भलांई सीमित रैयौ हुवै, पण उणां रै चिन्तन रौ कैनवास इतरौ व्यापक हौ कै वै हरेक बात माथै निष्पक्ष हुयनै खुली बहस करता। आप टेलीफोन एक्सचेंज में काम करता हा। आपरी कविता–पोथी 'जागती जोतां' मांय नौ कवितावां है, जिकी इण भांत है– मेघनाद, सिसपाळ, पुरु, पाबूजी, पातल–अकबर–मान, गोविन्द गुरु रा टाबरिया, धूड़कोट, डूंगजी–जवारजी अर बापू। आपरी कवितावां सुणण री मांग भारतीय फौजी उण बगत रा भारत रा रक्षामंत्री कैलासनाथ काटजू सूं करी ही, जिणरै कारण वै अचरज में पड़ग्या।

पाठ–परिचै

'मानखौ' सबद रौ अरथ तौ 'मिनख' सूं ईज है। मिनख इण समाज अर परिवार री मूल इकाई है। मिनखां सूं ई परिवार अर समाज रौ सरूप बणै। गिरधारी सिंह पडिहार री काव्यकृति 'मानखो' मांय मानखै रौ अरथ मूळ–सबद सूं बेसी है, जिणनै अेकदम सीधै रूप सूं यूं समझ सकां, जिकौ मिनख देही नै धारण करी है, वौ ईज मिनख नीं है। मिनख तौ वौ है जिकौ मिनखपणै नै जीवै। वौ खुद रै वास्तै नीं जीवै, नीं मरै, वौ जीवै तौ दूजां खातर अर मरै तौ दूजां खातर। जिकौ किणी ई भांत दूजां रै अस्तित्व नै मिटाय खुद रै अस्तित्व नै बणायौ राखणौ चावै, वौ मिनख नीं है। वौ मिनख जिकौ व्यक्तिवाद नै लेय'र चालै वौ मिनख नीं है, जिकौ प्रेम अर सहअस्तित्व नै लेय आगै बधै, वौ असली मिनख है। इणी मिनखपणै नै समझावण रौ प्रयास इण काव्य में करीज्यौ है। कवि गिरधारी सिंह पडिहार इण काव्य रौ आधार अेक पौराणिक कथा नै बणायी है, जिणमें सुरग रौ गंधर्व चित्रसेन आपरी प्रेम लीला में मर्यादा नै भूल अेक रिसी रौ अपमान कर देवै। भगवान कृष्ण उण रा अपराध नै अणदेख्यौ नीं कर उणनै मृत्यु–दंड देवण री धार लेवै। उणरी पत्नी सैं ठौड़ सरण री गुहार करै, पण कोई उणरी बात नीं सुणै क्यूंकै उणनै मौत री सजा देवण वाळा कोई और नीं, द्वारकाधीस होवै। गंधर्व हार मान'र खुद चिता चढण लागै जद सुभद्रा आय उणरी रिछ्या रौ अभय वर देवै, जिकी अर्जुन री पत्नी अर कृष्ण री बैन है। सुभद्रा उणनै सरण देय देवै। पछै गंधर्वराज रै जीवण नै उबारण रौ भार अर्जुन रै हाथां में आय जावै, कृष्ण उणनै मारण नै आवै पण अर्जुन उणरी रक्षा खातर त्यार हुय जावै। इण भांत कृष्ण अर अर्जुन आंम्ही–सांम्ही मोरचौ मांड लेवै। सेवट वै ईज रिसी वठै पूग जावै, जिकां रै कारण कृष्ण गंधर्वराज नै स्राप दियौ हौ। रिसी वांनै जुद्ध करतां नै रोकै, साथै ई जुद्ध सूं हुवण वाळी विणास री गति नै समझावै।

रिसी रौ मानणौ हौ कै जुद्ध किणी समस्या रौ समाधान नीं है। अेक जुद्ध दूजै जुद्ध नै जलम देवै। जुद्ध नै तो प्रेम सूं ईज खतम करयौ जाय सकै। लोग अधिकारां वास्तै जुद्ध करै, पण कवि मानै कै "अधिकार मानखै रौ निर्णय, इण जुद्धां सूं कद तांई होसी।" कवि मानै कै आं जुद्धां रौ प्रेम सूं उपचार नीं करीज्यौ तौ इण धरती रौ उपकार नीं अपकार ईज हुवैला। आज री इण परिस्थिति में जठै विश्व दो महाजुद्धां नै देख चुक्यौ है, उणरी पीड़ा नैं भोग चुक्यौ है, फेरूं ई केई छोटा–मोटा जुद्ध हुया अर हुय रैया है। कवि पडिहार वांनै रोकण री बात कैवै कै आं जुद्धां सूं किणी नै नुकसाण है तौ वौ 'मिनख' रै 'मिनखपणै' नै है।

मानखौ

औ चित्रसेन गंधर्व राज,
तीनूं लोकां नै बण्यौ भार।
चढ रयो चिता पर जीवतड़ौ,
देवां रौ प्यारौ कळाकार।।

झर–झर आंसू री धार झरै,
सांमै ऊभी बिलखै राणी।
प्रीतम अै'ड़ौ दिन आवैलौ,
आ सुपनै में ही नीं जाणी।।

चित्रसेन–सुभद्रा संवाद

बोली वाणी में नेह घोळ,
हूं बोल सुण्या इण झुरती रा।
धण कूकै कुरज जिंयां थांरी,
क्यूं जी'तौ चिता चढै बीरा।।

अणहूंतौ तनै दुखायौ कुण,
कुंकर औ बीखौ आय पड़्यौ?
तूं निरभै बात बता, बूझै–
पारथ रौ आधौ अंग खड़्यौ।।

मत पूछ मावड़ी बौ कुण है?
सुणतां ही पग पाछा पड़सी।
पोरस रा पाड़ झुकै जिणनै,
अबळा रौ बळ कांई अड़सी।।

रळ आधौ आध अंग पूरौ,
जद मिनख लुगाई कुण कम है।
जे नर है नद पुरसारथ रौ,
तौ नारी इणरौ उद्‌गम है।।

कैतां हीं जीव हुवै दोरौ,
जणनी नीं बात पराई है।
जदुनाथ द्वारका धणी जका,
थांरा बै सागी भाई है।।

राणी मां बुरौ मती मान्या,
दुनिया रौ सत बळ घटग्यौ है।
थांरै बस वाळी बात नहीं,
आधौ अंग पैली नटग्यौ है।।

जे आखी दुनिया मुख मोड़्यौ,
संकट नीं झाल सकी थारौ।
तो चित्रसेन अब डर कोनी,
सरणौ है तनै सुभद्रा रौ।।

मन हळकौ कर मत चित्रसेन,
आ धरा धरम नीं खोवैली।
हूं मर ज्याऊं पण मुड़ू नहीं,
अणहूंती कदै नीं होवैली।।

नीं बात अेक रै मरणै री,
आ चोट मरम पर आवै है।
कुळ धरम करम सत तेज लाज,
हूं मुड़्यां मानखौ जावै है।।

सुभद्रा–अरजुण संवाद

राव रावळै में बड़तां हीं,
अजब नजारौ देख्यौ।
राणी बखतर कसियोड़ी,
उणमुण उणियारौ देख्यौ।।

जोरावर जोधा ही सरणो,
सत नै दियां डरै है।
न्यासव पठंगै जकै नरां रै,
बै इन्याव करै है।।

प्रीतम सत दो कुळ रौ छीजै,
मरणै जिसी घड़ी है।
इण कारण आज सुभद्रा,
बखतर कस्यां खड़ी है।।

सरण दियां रण तौ रुप ज्यासी,
झली नहीं छूटैली।
बैर बसैलौ गिरधर सागै,
बात नहीं खूटैली।।

हाथ, हाथ नै काटै अै'ड़ौ,
मारग मत अंवळौ लौ।
भली बुरी नै तोलौ मन में,
कसिया बंधण खोलौ।।

मन रौ बोझ सबद नीं सांभै,
बोलूं तौ के बोलूं।
आभौ धरा भिळै है पारथ,
बखतर कूंकर खोलूं।।

अणहक मरणौ अेक मिनख रौ,
सांस अमूंज रही है।
गायक रै धरणी री सिसक्यां,
कानां गूंज रही है।।

अकरम ही मेटण नै, पारथ,
थां तौ रगत खिंडायौ।
मिनख धरम जुग–जुग जूझ्यौ है,
जद–जद अकरम आयौ।।

हूं असरण नै सरणौ दीनौ,
हूं हीं जुद्ध करूंली।
गिरधर जद गायक मारैला,
पै'ली जूंझ मरूंली।।

चावै जितरौ सिमरथ का'नौ,
अब पण नहीं सरैलौ।
लाख बात, सरणागत राणी,
थारौ नहीं मरैलौ।।

मुड़तां ही करम–धरम जावै,
बधतै रौ जी दुख पावै है।
पण जीवण री अै'ड़ी घड़ियां ही,
मिनखां रौ मोल बतावै है।।

●●

बृम–अस्त्र औ पासूपत,
औ हेलौ होड लगावण रौ।
नीं मंगळकारी गिरधारी,
आंधौ बळ भोम भिळावण रौ।।

जुद्धां पर धरा टिक्योड़ी है,
हरि अबै मानता आ मान्या।
नर री मुट्ठी खैनास खड़्यौ,
नेड़ै ही अंत हुयौ जाण्या।।

मिळसी मत, असत, करम, अकरम,
इन्याव, न्याव अणहूत हूंत।
झटकै में आखौ जगत मिटै,
जद पाप पुन्न री किसी कूंत।।

रण कठै जका नीं करै जका,
दुबळा, बूढा, बाळक, नारी।
दोसी अणदोस दया जोग,
मिटसी दुनिया पसु पंख्यां री।।

हूं मानूं भोम बंट्योड़ी है,
न्यारी सत्तावां मत न्यारा।
जन–मन न्यारा, जातां न्यारी,
अधिकार अड़्यां रा मत न्यारा।।

पण न्यारपणै रै नेचै स्यूं,
जे अब नर ऊंचौ नीं आसी।
तौ सै डाळां सागै ढैसी,
जग–रूंख मूळ स्यूं मिट जासी।।

आ तमोगुणी सगळी पूजा,
मारग हिरणांकुस–रावण रौ।
आं छोळा समद हबोळां रौ,
झोलौ जग ज्याज डुबावण रौ।।

सिमरथ हरि थे ग्यानेसर हौ,
ग्यानी नै ग्यान किसौ देणौ।
किल्याण विचारौ दुनिया रौ,
म्हारौ तौ इतरौ ही कैणौ।।

अै तन जोरावर मिनखां रा,
बोट्यां में बढियोड़ा सोवै।
कागा कांवळिया गीरज गीध,
चौगड़दै गादड़िया रोवै।।

मनड़ौ मिचळावै घड़ी–घड़ी,
नीं ठौड़ ठैरणै जैड़ी है।
रवि आथूंणै नाकै पूग्यौ,
संध्या री बेळा नैड़ी है।।

सेना नै मोड़ौ मुड़ौ अबै,
विनय बिचारण री थांस्यूं।
गढ धरमराज रै हथनापुर,
हूं देव द्वारका घिर आस्यूं।।

औ जग थाक्योड़ौ जुद्धां स्यूं,
अब पाप लारला धोणा है।
उळझ्या आंटा सुळझावण रा,
दूजा ही मारग जोणा है।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

ऊभी=खड़ी। अणहूंतौ=घणौ। बीखौ=विपदा, संकट। पारथ=अर्जुन। आखी=सगळी, सारी, सैंग। बखतर=जुद्ध रौ वेस। जोरावर=सूरवीर। जोधा=वीर। अंवळौ=दो'रौ। आभौ=आकास। रगत=खून। धरा=धरती। धरणी=धरा, धण, जोड़ायत।

सवाल

विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'मानखौ' खंडकाव्य संदेस देवै–
   (अ) मिनखपणै रौ (ब) जुद्ध रौ
   (स) महाजुद्ध रौ (द) साच रौ

( )

2. चित्रसेन कुण हौ?
   (अ) मिनख (ब) गंधर्व
   (स) देवता (द) राकस
   ( )

3. चित्रसेन नै मौत री सजा कुण सुणायी?
   (अ) सुभद्रा (ब) अर्जुन
   (स) श्रीकृष्ण (द) रिसी
   ( )

4. चित्रसेन नै सरणौ कुण दियौ?
   (अ) सुभद्रा (ब) अुर्जन
   (स) इन्दर (द) राम
   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. कवि गिरधारी सिंह पड़िहार रौ जलम कद अर कठै हुयौ?
2. 'मानखौ' रै अलावा गिरधारी सिंह पड़िहार री अेक पोथी और कुणसी है?
3. 'मानखौ' कृति मांय कित्ता सरग है?
4. समाज अर परिवार री मूळ इकाई कुणसी है?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. ''न्याव पठंगै जिकै नरां रै, वै इन्याव करै है।'' काव्य री आं ओळ्यां रौ भाव विस्तार करौ।
2. ''पोरस रा पा'ड़ झुकै जिणनै, अबळा रौ बळ कांई अड़सी'' कविता री ओळ्यां में कवि रौ कांई आसय है?
3. 'दूजा ही मारग जोणा है'' काव्य–ओळी में कवि कांई कैवणौ चावै?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. कवि गिरधारी सिंह पड़िहार इण काव्य रौ आधार पौराणिक कथा नै बणायौ है। इण कथा रौ सार लिखौ।
2. 'मानखौ' खंडकाव्य कांई संदेस देवै? विस्तार सूं समझावौ।
3. चित्रसेन अर सुभद्रा रै संवाद रौ सार लिखौ।
4. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) झर–झर आंसू री धार झरै, सांमै ऊभी बिलखै राणी।
प्रीतम अै'ड़ौ दिन आवैलौ,आ सुपनै में ही नीं जाणी।।

(ब) हाथ, हाथ नै काटै अै'ड़ौ, मारग मत अंवळौ लौ।
भली बुरी नै तोलौ मन में, कसिया बंधण खोलौ।।

(स) चावै जितरौ सिमरथ का'नौ, अब पण नहीं सरैलौ।
लाख बात, सरणागत राणी, थारौ नहीं मरैलौ।।

(द) सेना नै मोड़ौ मुड़ौ अबै, विनय बिचारण री थांस्यूं।
गढ धरमराज रै हथनापुर, हूं देव द्वारका घिर आस्यूं।।

कविता
'जुगवांणी' अर 'हेत चाईजै'

गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद'

कवि–परिचै

आधुनिक राजस्थानी काव्य परंपरा मांय केई कवि इण भांत रा रैया जिका राजस्थानी काव्य री सेवा रै साथै स्वतंत्रता संग्राम में भी आपरी महताऊ भूमिका निभाई अर समाज रै विकास में भी आपरौ योगदान दियौ। इण कड़ी में सैं सूं महताऊ नाम जनकवि गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' रौ रैयौ है। जनकवि 'उस्ताद' रौ जनम 21 मार्च, 1907 ई. नै जोधपुर में हुयौ। आपरा पिताश्री चन्द्रभाणजी हा, जिका खुद ई कवि हा अर स्वाभीमानी व्यक्तित्व रा धणी हा। आपरा नानाजी जोधपुर राज रा दीवान भी रैया। उस्ताद औपचारिक शिक्षा में घणा आगै नीं बध सक्या, पण वैवारिक ग्यांन में घणा आगै बधग्या। इणी वास्तै वांनै दियौड़ै नांव 'उस्ताद' नै वै खरौ सिद्ध कर्‌यौ। जीवण री सरुआत वै अेक ठिकाणै री नौकरी सूं करी, पण उठै रा अत्याचार देख वांरै मन में सोसण अर करसां रै वास्तै जिकौ भाव जाग्यौ वौ भाव जीवन–भर नीं छूट सक्यौ। वै करसां, मजदूरां वास्तै लड़ता रैया। वै समाज में सोसण रै खिलाफ आवाज उठायी, जात–पांत सूं, राजशाही सूं लड़्या अर देस री आजादी खातर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड्‌या। वांनै केई बार जेळ री यात्रावां भी करणी पड़ी, पण वै हार्‌या नीं। आपरै काव्य नै आधार बणाय वै लगौलग संघर्ष करता रैया। औ संघर्ष कोरौ स्वतंत्रता प्राप्ति तक ईज नीं रैयौ, वै देस रै स्वतंत्र हुयां पछै 'स्वराज' खातर नीं तो 'सुराज' खातर संघर्ष कर्‌यौ। आपरी केई कवितावां में इण भांत रा भाव देख्या जा सकै। सोसण, अत्याचार, स्वराज्य अर सुराज खातर संघर्ष करतां–करतां कवि जनता रौ सेवक, उणरौ मारग–दरसक बणग्यौ। वौ जन–जन नै उणरै अधिकारां खातर जगावतौ रैयौ। 'उस्ताद' आपरै काव्य में 'जन' रै अलावा और किणी नै स्वीकार नीं कर्‌यौ। वौ जन रौ साचौ सेवक बण्यौ, इणी वास्तै लोग उणनै जनकवि रौ नांव देय दियौ। जनकवि री दीठ आ रैयी कै समाज नै जगावणौ है तौ समाज में नारी नै जगावणौ पड़ैला, समाज में नारी नै ठावी ठौड़ दिरावणी पड़ैला। इणी कारण सूं जनकवि 'उस्ताद' रै काव्य में नारी 'सिणगार–सुंदरी' बण'र सांम्ही नीं आवै। वा समाज में चेतना जगावण वाळी 'सगती पुंज' बण सांम्ही आवै। वा सोसण, अत्याचार रै खिलाफ लड़ै अर समाज रै विकास खातर आपरी बरोबरी री भूमिका निभावै। वा पड़दां, म्हैलां, हवेलियां या गैंणां में दब्योड़ी कमजोर नारी नीं है, वा मरद रै साथै–साथै संघर्ष करण वाळी अर जे मरद आपरौ कर्तव्य भूल जावै तो उणनै मारग दिखावण वाळी सगती ई बण सांम्ही आवै। देश री सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियां सूं संघर्ष करण वाळौ कवि आजादी रै पछै ई सुराज खातर लड़तां–लड़तां 29 अक्टूबर, 1965 रै दिन आपरी भौतिक काया नै छोड दी। कवि भलां ई आज नीं है, पण उणां रै काव्य–रूप बोलां में आजलग जीवण री जोत जागती निजर आवै।

पाठ–परिचै

'जुगवांणी' कविता जनकवि री आत्मा री आवाज अर उणरै काव्य–संदेस रौ सार है, जठै वौ आपरै सैंजोड़ जुग नै समझै अर समझावै। कवि इणमें इण बात रौ खुलासौ करै कै समाज

रौ साचौ सेवक अर साचौ मारग–दरसक वौ ईज कवि है जिकौ किणी ई परिस्थिति में झुकै नीं, किणी ई लोभ, लालच या डर–भय सूं दबै नीं। साचौ साहित्यकार वौ ईज है, जिकौ सगळां नै साच रा दरसण करावै। साचौ मिनख नीं तौ आज तक दब्यौ है अर नीं आगै ई कदैई दबैला। जनकवि लिखै कै जद–जद जनता री आवाज नै कोई दबावण री कोसीस करी है, तौ जनता उणनै पलट'र जबाब दियौ है। झूठ–अन्याय, अत्याचार घणा दिनां तक चालण वाळा नीं है। जनकवि 'उस्ताद' आगै लिखै कै इतिहास में केई लोग आया–गया है, पण लोग तो उणां नै ईज याद राखै जिका साच नै समझै अर समझावै, साच सूं डरै कोनी। मिनख री काया तौ आवणी–जावणी है, पण इण जगत में मिनख आपरै करम सूं, आपरी करणी सूं, आपरी दीठ सूं, आपरै संदेस सूं जीवतौ रैवै। साचाणी औ जनकवि ई इणी भांत जीवै है।

इणी भांत 'हेत चाइजै' में जनकवि समाज में सब तरै री विसमतावां नै मिटावण रौ संदेस दियौ। 'उस्ताद' रौ मानणौ रैयौ कै समाज रौ जे विकास करणौ है तौ समाज में 'हेत' अर 'अपणायत' रौ भाव जगावणौ पड़ैला। इणी वास्तै वै लिखै कै ''जन जन रै मन हेत चाइजै।'' जद जुग में बदळाव हुवै, उण बेळा लोगां में अेकता अर सावचेती हुवणी चाईजै। जे समाज में फूट–फजीता हुवै तौ वौ समाज विकास नीं कर सकै। जिण समाज में जांत–पांत रै धरम अर आधार सूं फरक करीजै वौ समाज कदैई आगै नीं बध सकै। जनकवि 'उस्ताद' आ बात खरै रूप सूं लिखै कै मिनख रै भाग्य नै बणावण वाळौ कोई दूजौ नीं हुवै, मिनख आपरौ भाग खुद बणावै। इण समाज रै विकास खातर नेतावां, अफसरां, करसांणां, मजूरां अर सगळी जनता नै अेक हुवणौ चाईजै। सगळां री अेकता सूं ईज देस केसर री क्यारी ज्यूं फूठरौ अर महकतौ बणैला।

जुगवांणी

आ जनकवि री जुगवांणी, आ कदेन चुप रह जांणी,
कोई लाख जतन कर हारे, आ समझे सांच सुणाणी।

कोई मार कूट धमकाई, धन–कुरब–धाम ललचाई,
सै जुग रा जुल्मी खपग्या, इण करी नहीं सुणवाई,
आखड़िया सो आथड़िया, इण माथै धूंस जमाणी।

जन जन रै पग बेड़ी ही, जनता गाडर जैड़ी ही,
राजा रौ जोर जमांवण, अंगरेज फौज नेड़ी ही,
जद कठै दबी जबरां सूं, अब किणरै हाथ दबांणी।

जद गोरी हकुमत अड़ती, सड़कां पर गोळ्यां झड़ती,
जेळां में चौखट चढ़िया, मौरां री खाल उधड़ती,
पण जै स्वराज घुर्राता, नरसिंघ जुत्योड़ा घांणी।

आ चोट लग्यां चमकै है, निरणां पेटां दमकै है,
फाटा जामां में रण रा, झंडा गिणती धमकै है,
इण रा धण–टाबर जांणै, विपदा माथै मुसकांणी।

आ भूला समझा लेला, ऊजड़ खड़तां पालैला,
पूठै, इण घड़ी अगाड़ी, हाली, हाकै, हालैला।
जुग–जुग इण री भावी है, सिलगांणी फेर बणांणी।

गायक इक दिन मिट जासी, पण अैड़ा गीत बणासी,
जन–जन रे कंठां रमसी, पीढी–दर–पीढी जासी,
आ काया तौ कवि री है, पण जनता री जुगवांणी।

⌘⌘

हेत चाईजै

जन–जन रे मन हेत चाईजै,
जुग साथै संकट री वेळा, सगळा सुभट सचेत चाईजै।

जिण जनता में फूट–फजीती, खुली किंवाड़्या, लोग नचीता,
तक मिलतां उण घर में बड़सी लूंक, सियाळ्या, गंडक, चीता,
जन–बळ में लय बजर कटै, पर तन बळ तेज सचेत चाईजै।

धरम–ढूंग रा खुल्या खलीता, जात–पांत रा जग्या पलीता,
जुग जीवण में लाय लगाता, पनप रया जन लोही पीता,
फूट समंद री भंवरा तिरबा, जन–मन मेळप सेत चाईजै।

लिख्या लेख सूं लोक मुगत है, पण जीवन जंजाळ जुगत है,
नवा राव ने नवा रावळा, कुण जांणै जन री हुकमत है,
काम करै वांरी रसना में, करी बात रौ बेंत चाईजै।

अेक चरै चौरासी पीसै, उण घर समता किण विध दीसै,
जन रा पीड़क करै खंखारा, जन रा भीडू मुड़दा घीसै,
धाड़वियां रै धूड़ माजनै, न्हांखण मूठी रेत चाईजै।

नेता, हाकम, नै इधकारी, हळधर कळधर जनता सारी,
एक मनां पुरसारथ कर नै, मुलक करै केसर री क्यारी,
भुज मैणत रा सीरी उपजै, खरौ कमायौ खेत चाईजै।

धर खैंचण दुसमण सींवाड़ै, दो चीता दोनूं दिस दहाड़ै,
अेक मनो जाग्यां जनजीवण, अेक भिड़ै इक्कीस पछाड़ै,
बजरबळी भारत रै रथ रा, सगळा तुरंग कुमेत चाईजै।

रजथांनी, कस्मीर, बंगाली, पंजाबी, उड़िया, मलियाळी,
करणाटक गुजरात मराठा, केरल उत्तराखंड रा हाळी,
वां में भुज मैणत भेळप री, नवजीवण री नेत चाईजै।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

जुगवांणी=समै री आवाज। जुल्मी=जुल्म करणिया, अत्याचारी। खपग्या=खतम हुयग्या। आखड़िया=लड़खड़ाया। बेड़ी=गुलामी री सांकळ। गाडर=भेड़। जबरां=ताकतवर। निरणां=भूखा। जामां=कपड़ा। ऊजड़=बिना मारग रै। जूझारां=जुद्ध रै मांय जूझण वाळा जोद्धा। पळीता–पूळौ लगावणौ, लड़ाई री लाय। लाय=आग। लोही=खून। पींडक=पीड़ देवणिया। भीडू=पक्षधर। धाड़वी=लूटेरा। सींवाड़ै=सीमा माथै। तुरंग=घोड़ा। रसना=जीभ। बेंत=नाप, माप।

सवाल

विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. जनकवि गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' कुणसी काव्यधारा रा कवि है–
   (अ) प्रगतिसील (ब) प्रकृतिसील
   (स) सम्बोधन काव्य (द) हालावादी
   ( )

2. 'जुगवांणी सूं कवि रौ मानणौ है–
   (अ) कवियां री वांणी (ब) समै री साची वांणी
   (स) आजादी री वांणी (द) मजदूरां री वांणी
   ( )

3. जद देस गुलाम हौ, जनता कैड़ी ही?
   (अ) भोळी ही (ब) गाडर जैड़ी
   (स) गाय जैड़ी (द) बेड़ी जैड़ी
   ( )

4. ''मौरां री खाल उधड़ती।'' इण ओळी में 'मौरां री खाल' सूं कवि रौ आसय है–
   (अ) पीठ री चामड़ी (ब) मोर री खाल
   (स) राजा मोरधज (द) जेळां रा मोर
   ( )

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. साच कुण सुणावै?
2. जै स्वराज कुण घुर्राता?
3. निरणां पेट सूं कांई मतलब है?
4. ऊजड़–खड़तां सूं कांई मतलब है?
5. 'धावड़ियां रै धूड़ माजनै' में कवि कांई कैवै?
6. 'सगळा सुभट सचेत' चाईजै में कुण–सो अलंकार है?

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'जुग रा जुलमियां' जुगवांणी नै थामण सारू कांई–कांई कर्‌यौ?
2. 'आ समझै सांच सुणाणी' सूं कांई आसय है?
3. जनता नै 'गाडर' जैड़ी क्यूं बताईजी है?
4. 'जुगवांणी' कांई–कांई काम करसी?
5. 'जिण जनता में फूट फजीता' हुवण सूं कांई हुवै?
6. 'फूट समंदरी भंवरा तरळा' में कवि कांई कैवणौ चावै?
7. समता ल्यावण सारू कांई करणौ पड़सी?

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'जुगवांणी' कविता आधुनिक प्रगतिशील काव्यधारा री अेक नामी कविता है। समझावौ।
2. 'हेत चाईजै' कविता रौ सार लिखौ।
3. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) आ चोट लग्यां चमकै है, निरणां पेटां दमकै है,
फाटा जामां में रण रा, झंडा गिणती धमकै है,
इण रा धण–टाबर जांणै, विपदा माथै मुसकांणी।

(ब) गायक इक दिन मिट जासी, पण अैड़ा गीत बणासी,
जन–जन रे कंठां रमसी, पीढी–दर–पीढी जासी,
आ काया तौ कवि री है, पण जनता री जुगवांणी।

(स) जिण जनता में फूट–फजीती, खुली किंवाड़्या, लोग नचीता,
तक मिलतां उण घर में बड़सी लूंक, सियाळ्या, गंडक, चीता,
जन–बळ में लय बजर कटै, पर तन बळ तेज सचेत चाईजै।

(द) नेता, हाकम, नै इधकारी, हळधर कळधर जनता सारी,
एक मनां पुरसारथ कर नै, मुलक करै केसर री क्यारी,
भुज मैणत रा सीरी उपजै, खरौ कमायौ खेत चाईजै।

कविता
ईश्वर!, राम–नाम, साच'र झूठ!, निराकार!

कन्हैयालाल सेठिया

कवि–परिचै

आधुनिक राजस्थानी काव्य परम्परा रा वै कवि जिका राजस्थानी काव्य नै नूंवी पिछाण दिरायी, कविता नै नूवैं ढाळै ढाळी अर इणनै भाव अर भासा री नूंवी आधारभोम दी, वां में कवि कन्हैयालाल सेठिया रौ नांव हरावळ में है। कवि सेठिया रौ जनम 11 सितम्बर, 1919 नै चूरू जिला रै सुजानगढ़ में हुयौ। सरुआती जीवण आपरौ अठै ईज बीत्यौ, पण पछै आप कलकत्ता गया परा। बठै सूं आप स्नातक स्तर री पढ़ाई करी। उणरै पछै आजादी रा आंदोलन में कूदग्या। इण सूं पढ़ाई छूटगी, जिकी घणां बरसां पछै जयपुर सूं पूरी हुई। सेठियाजी माथै गांधी–दरसण री छाप रैयी। आप प्रगतिसील रचनावां ई लिखी, पण आपरी कविता रौ मूल भाव अध्यात्म अर दरसण रौ रैयौ। आपरी कवितावां प्रकृति रा भावां नै भी उकेरया। कवि कन्हैयालाल सेठिया री दो रचनावां राजस्थान अर राजस्थानी काव्य री पिछाण बणगी, जिणमें अेक 'धरती धोरां री' अर दूजी 'पातल अर पीथल' रैयी। राजस्थानी धरा अर इणरै अनूठै इतिहास री झांकी 'धरती धोरां री' गीत सूं मिळै, तौ 'पातल अर पीथल' कविता री ओळियां 'अरे घास री रोटी ही...' हरेक मरुधरवासी रै कंठां रौ हार बणगी। आ कविता महाराणा प्रताप रै गौरव रौ बखाण कर्‌यौ है। 'रमणियै रा सोरठा' काव्य–कृति नीति काव्य परंपरा रौ सांतरौ उदाहरण है। किणी भी कविता में भासा, सिल्प, भाव–सम्पदा अर सम्प्रेषणीयता री विसेसता हुवणी घणी जरूरी मानीजी है। जे इणां मांय सूं कोई अेक भाव भी कमजोर हुय जावै, तौ उण कविता रौ प्रभाव भी कम हुय जावै। इण दीठ सूं देखां तो लखावै कै सेठिया रौ काव्य कठैई कम हुवतौ नीं लागै। सबदां अर भावां में गंभीरता है, तौ विचारां री क्रमबद्धता काव्य आनन्द नै संपूरण करै।

कन्हैयालाल सेठिया री काव्य–कृतियां इण भांत रैयी है– 1. रमणियै रा सोरठा 2.मींझर 3. गळगचिया (गद्यगीत) 4. कूं कूं 5. लीलटांस 6. धर कूचां धर मजलां 7. सतवाणी 8. सबद 9. अघोरी काळ 10. मायड़ रौ हेलौ 11. कक्कौ कोड रौ 12. दीठ 13. लीक–लकोळिया आद। आपरी 'निर्ग्रंथ' पोथी माथै भारतीय ज्ञानपीठ कांनी सूं 'मूर्ति देवी पुरस्कार' मिळ्यौ। साहित्य अकादेमी कांनी सूं 'लीलटांस' माथै पुरस्कार दिरीज्यौ। राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर कांनी सूं 'मनीषी सम्मान', राजस्थानी भासा, साहित्य, संस्कृति अकादमी, बीकानेर कांनी सूं 'सूर्यमल्ल मीसण पुरस्कार' आपनै मिळ्यौ। इणां रै अलावा राजस्थान विश्वविद्यालय कांनी सूं मानद् डीलिट्. उपाधि सेती केई सम्मान मिळ्या। आपनै भारत सरकार कांनी सूं 'पद्मश्री' सरीखौ सिरै सम्मान ई मिळ्यौ।

पाठ–परिचै

पाठ में दिरीजी कविता, कवि कन्हैयालाल सेठिया री 'लीलटांस' पोथी सूं लिरीजी है। 'लीलटांस' भाव अर दरसण री गंभीरता लियोड़ी पोथी है। इण पोथी री सैं सूं मोटी खासियत

है कै इण कृति री 68 कवितावां, जिकी दिखण में छोटी–छोटी है, पण दरसण, समाज, मनोविज्ञान, साहित्य अर संस्कृति जैड़ा विसयां नै लियोड़ी है। अै छोटी–छोटी कवितावां कठैई तौ ज्ञान–सूत्रां नै परिभासित करै, तौ कठैई ज्ञान री ग्रंथियां नै खोलै। इणां में कठैई समाज री विसमता रौ वरणाव है, तौ कठैई वां विसमतावां रौ हल ई है। कठैई मानखै रै मन री समस्यावां रौ सुळझाव ई है, तौ कठैई मानव मन री कमजोरी नै ई दरसायी है। भावां री गंभीरता लियां अै कवितावां सेठियाजी रै विचार–दरसण री ओळखाण करावै।

ईश्वर!, राम–नाम, साच'र झूठ, निराकार!

ईश्वर!

कुण देख्यौ है
ईश्वर?
ईं सवाल रौ जबाब
औ तळाब,
जको कोनी देख्यौ समन्दर!

राम–नाम

सोनै रौ पींजरौ
मखमल री खोळी
रतन बाटकां में
दाड़म'र दाख
सिखावै सूवटै नै
बोल मिट्ठू
राधेश्याम
सामूंसाम
गळी में बैठौ
भूखौ सूरदास
छोड दिया पिराण
रट रट'र राम–नाम!

साच'र झूठ!

चाकी रौ
हेटलौ पाट
साच,
ऊपरलौ पाट
झूठ,
साच रै
सांम्ही छाती कील
झूठ रै
पूठ में मूठ!

निराकार!

परतख नै
कांई
परमाण री दरकार!
कांदै रा
छूंतका उतार
आकार में
निराकार!
⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

सूवटौ=मिट्ठू, तोतौ। सूरदास=आंधौ आदमी। पिराण=प्राण, सांस। चाकी=घट्टी। हेठलौ=निचलौ। पूठ=लारै, पीछै। परतख=सैमूंडै, सन्मुख। कांदौ=प्याज। दाड़म=अनार। दाख=किसमिस। दरकार=जरूरत।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. कन्हैयालाल सेठिया रौ जनम कठै हुयौ–
   (अ) हनुमानगढ़ (ब) सुजानगढ
   (स) जूनागढ (द) भरतपुर
   ( )
2. केन्द्रीय साहित्य अकादेमी सूं पुरस्कृत कृति कुणसी है–
   (अ) लीलटांस (ब) मींझर
   (स) अघोरी काळ (द) कूंकूं
   ( )
3. कुणसी कविता कन्हैयालाल सेठिया री नीं है–
   (अ) साच'र झूठ (ब) निराकार
   (स) जुद्ध (द) राम नाम
   ( )
4. ''कांदै रा छूंतका उतार' में कवि रौ भाव रैयौ है–
   (अ) कांदै रै स्वाद रौ (ब) संसार रै मोह रौ
   (स) निराकार रौ (द) इण मांय सूं अेक ई नीं
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी भासा रै अलावा कवि री रच्योड़ी खास रचनावां रा नांव बतावौ।
2. इण पाठ री कवितावां कवि री कुणसी पोथी सूं लियोड़ी है?
3. साच रै सांम्ही छाती कांई ऊभी है?
4. तळाब कांई नीं देख्यौ?
5. रतन बाटकै में दाड़म अर दाख किण सारू हा?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल–

1. 'ईश्वर' कविता रै माध्यम सूं कवि कांई कैवणौ चावै?
2. 'साच'र झूठ' कविता कांई संदेस देवै?
3. कन्हैयालाल सेठिया री खास रचनावां रा नांव बतावौ।
4. 'निराकार' कविता रौ भाव बतावौ।
5. 'राम नाम' कविता में आई संवेदना नै ध्यान में राखतां थकां कवि री दीठ नै उजागर करौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''सेठिया री काव्यचेतना में सांस्कृतिक, प्रगतिशील अर आध्यात्मिक भाव उजागर होवै।''
   पठित कवितावां रै आधार माथै इण कथन रौ खुलासौ करौ।
2. इण काव्य रै आधार माथै सेठिया जी रै काव्य रौ भावपख अर कलापख समझावौ।

3. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) चाकी रौ हेठलौ पाट/साच
ऊपरलो पाट/झूठ
साच रै सांम्ही छाती/कील
झूठ रै पूठ में/मूठ!

(ब) कुण देख्यौ है/ईश्वर?
ईं सवाल रौ जवाब
औ तळाब,
जको कोनी देख्यौ समदर!

(स) परतख नै/कांई
परमाण री दरकार!
कांदै रा/छूंतका उतार
आकार में/निराकार!

कविता
सैनाणी

मेघराज 'मुकुल'

कवि–परिचै

राजस्थानी कवि–सम्मेलनां रै मंच रा ख्यातनांव कवियां में मेघराज 'मुकुल' रौ नांव घणौ ऊंचौ अर अनमोल रैयौ है। आप मंच रै जरियै राजस्थानी कविता नै जन–जन तक पूगाय इणनै अेक नूवीं पिछाण दी है, वांरौ औ चमत्कार राजस्थानी प्रेमी कदी नीं भूल सकै। कवि मेघराज 'मुकुल' रौ जनम चुरू रा 'राजगढ़' गांव में 17 जुलाई, 1923 नै हुयौ। आपरौ परिवार तौ साधारण रैयौ, पण आप नांव कमावण में कदी लारै नीं रैया। छोटी अवस्था सूं काव्य सिरजण कर आप घणौ जस कमायौ। राजस्थानी लोक री गौरव गाथावां नै आप आपरै भावां अर आखरां सूं नूंवौ रूप दियौ अर वां काव्य नायकां नै अमर कर दिया जिणां री चितार लोक में कीं कम हुयगी ही। आपरी ओजस्वी वाणी सूं निकळ्या वै सबद अर सबदां सूं उकेर्‌योड़ा पात्र लोक में नूंवी रंगत साथै अमर हुयग्या। 'दिनाजपुर' रा कवि सम्मेलन सूं आप जिकी लोक में पैठ बणायी उण रौ वरणाव नीं कर्‌यौ जाय सकै। आपरी कवितावां री पैठ लोक में इतरी गैरी अर इतरी चावी रैयी कै लोग चालती रेलगाडियां रोक, आपरी कवितावां नै सुणण री मांग करता। आपरी अेक कविता 'सैनाणी' आं कवितावां मांय सूं सिरै गिणी जा सकै। आ कविता राजस्थानी भासा अर काव्य नै अेक नूंवी पिछाण दी। मेघराज 'मुकुल' री साहित्य अर काव्य–साधना हिन्दी अर राजस्थानी दोनूं ही भासावां मांय चालती रैयी। यूं तौ आपरी रचनावां वीर नायकां सूं जुड़ी रैयी, पण उण भावां मांय समै मुजब लगोलग बदळाव ई हुवतौ रैयौ। छंदबद्ध कविता सूं गजल तक आप लिखी। मुक्तछंद, महाकाव्य सिरखी गाथावां, गीत आपरी काव्य–सैली रा चावा दाखला है। इणां रै साथै बिम्बां अर प्रतीकां रौ भी नूंवौ प्रयोग आपरै काव्य री सफलता कैयी जाय सकै। आप काव्य साधना रै साथै–साथै आप नाटक, रेडियो–रूपक ई लिख्या, जिका आकासवाणी अर दूरदरसण सूं प्रसारित हुया। आपरी राजस्थानी पोथियां इण भांत है– 1. सैनाणी 2. कोडमदे, 3.डांफर, 4. चंवरी आद। भाव, भासा अर चिंतन नै समै रै साथै नूंवौ–नूंवौ रूप देवणौ मुकुल जी रै काव्य री खास विसेसता कैयी जाय सकै। साहित्य री साधना करतां–करतां मुकुलजी रौ सुरगवास 30 नवम्बर, 1996 नै हुयग्यौ।

पाठ–परिचै

'सैनाणी' कविता आधुनिक राजस्थानी काव्य परंपरा रौ अैड़ौ 'कीरतथंभ' है, जिणसूं राजस्थानी काव्य नै नूंवी पिछाण मिळी। हाल तक जिका लोक राजस्थानी नै दूहा–छंदा रौ पारम्परिक काव्य मानता, उणनै मुक्त छंद री कविता सूं, सुरीला गीतां सूं मंच तक पुगावण रौ काम कवि मुकुल कर्‌यौ। भलां ई मंच री पिछाण चिर–थिर नीं रैवै, पण उण मंच सूं जणै–जणै तक राजस्थानी काव्य पूग जावण में सफल रैयौ, जिणरौ श्रेय 'मुकुल' नै दियौ जावणौ चाईजै। 'सैनाणी' कविता रा काव्य–आधार में मेवाड़ रा सलूम्बर ठिकाणै रा चूंडावत सिरदार अर वांरी हाडी राणी रैया। आं दोनूं रौ ब्याव हुयौ ईज हौ, सेज बिछती ईज ही कै रणभेरी बाजगी।

चूंडावत सरदार जुद्ध में जावण वास्तै झिझक्या, वै नूंवी राणी रै मोह में पड़ण लागा। राणी वांनै जुद्ध में भेज तौ दिया, पण फेरूं ई वांरौ मन राणी में ईज अटक्यौ रह्यौ। वै सेवक नै भेज राणी सूं 'सैनाणी' मांगी। हाडी राणी समझगी कै म्हारौ मोह वांनै कर्तव्य–पालन सूं विरत कर रैयौ है। वा खुद रै हाथां आपरौ सीस काट 'सैनाणी' सरूप में भेज दियौ। सैनाणी नै देख सरदार चमकग्या। वै उण मुंडमाळ नै गळै धारण कर कर्तव्य–पालन में आपरै देह नै होम दी। वीर नायिका री आ अमर गाथा आज लग लोक में अमर है अर राजस्थानी वीरागंनावां री ओळख नै आ कविता बणायी राखी है। इण गाथा नै कवि इण कविता सांतरै ढंग सूं मांडी है। इण कविता में सिणगार, वीर, रौद्र, भयानक अर वीभत्स रस सांम्ही आया है, पण सैं सूं महताऊ है राजस्थानी वीर–वीरांगनावां रौ आदर्श अर बळिदान।

सैनाणी

सैनाण पड़्यो हथळेवै रौ, हिंगळू माथै में दमकै ही।
रखड़ी फेरां री आण लियां, गमगमाट करती गमकै ही।
कांकण–डोरो पूंचै मांही, चुड़लौ सुहाग लै सुघड़ाई।
चुंदड़ी रो रंग न छूट्यो हो, था बंध्या रह्या बिछिया तांई।

अरमाण सुहाग–रात रा ले, छत्राणी महलां में आई।
ठमकै सूं ठुमक–ठुमक छम–छम, चढगी महलां में सरमाई।
पोढण री अमर लियां आसा, प्यासा नैणां में लियां हेत।
चूंडावत गंठजोड़ो खोल्यो, तन–मन री सुध–बुध अमिट मेट।

पण बाज रही थी सहनाई, महलां में गूंज्यो संखनाद।
अधरां पर अधर झुक्या रहग्या, सरदार भूलग्यौ आलिंगन।
रजपूती मुख पीळौ पड़ग्यौ, बोल्यौ, 'रण में नहिं जाऊंला।
राणी! थारी पलकां सहळा, हूं गीत हेत रा गाऊंला।'

'आ बात उचित है कीं हद तक, ब्या' में भी चैन न ले पाऊं?
मेवाड़ भलां क्यूं हो न दास, हूं रण में लड़ण नहीं जाऊं।'
बोली छत्राणी, 'नाथ! आज थे मती पधारौ रण मांही।
तलवार बतादयौ, हूं जासूं, थे चूड़ौ पैर रैवौ घर मांही।'

कह, कूद पड़ी झट सेज त्याग, नैणां में अगनी चमक उठी।
चंडी रौ रूप बण्यौ छिण में, बिकराळ भवानी भभक उठी।
बोली, 'आ बात जचै कोनी, पति नै चाहूं मैं मरवाणौ।
पति म्हारो कोमल कूंपळ सो, फूलां सो छिण में मुरझाणौ।

पैल्यां कीं समझ नहीं आई, पागल सो बैठ्यौ रह्यौ मूर्ख।
पण बात समझ में जद आई, हो गया नैण इकदम्म सुर्ख।
बिजळी–सी चाली रग–रग में, वो धार कवच उतर्‌यो पोड़ी।
हुंकार 'बम बम महादेव', 'ठक–ठक–ठक ठपक' बढ़ी घोड़ी।

पैल्यां राणी नै हरख हुयौ, पण फेर ज्यान–सी निकळ गई।
काळजौ मुंह कांनी आयौ, डब–डब आंखड़ियां पथर गई।
उन्मत–सी भाजी महलां में, फिर बीच झरोखां टिक्या नैण।
बारै दरवाजै चूंडावत, उच्चार रह्‌यौ थो वीर–बैण।

आंख्यां सूं आंख मिळी छिण में, सरदार वीरता बिसराई।
सेवक नै भेज रावळै में, अन्तिम सैनाणी मंगवाई।
सेवक पहुंच्यो अन्तःपुर में, राणी सूं मांगी सैनाणी।
राणी सहमी फिर गरज उठी, बोली, 'कह दै मरगी राणी।'

फिर कह्यौ, 'ठहर! लै सैनाणी', कह झपट खड़ग खींच्यौ भारी।
सिर कट्यौ हाथ में उछळ पड़्यौ, सेवक भाज्यौ ले सैनाणी।
सरदार ऊछळ्यौ घोड़ी पर, बोल्यो, 'ल्या–ल्या–ल्या सैनाणी।'
फिर देख्यौ कट्यौ सीस हंसतौ, बोल्यौ, 'राणी! मेरी राणी।'

'तूं भली सैनाणी दी राणी! है धन्य धन्य तूं छत्राणी।
हूं भूल चुक्यौ हो रण–पथ नै, तूं भलौ पाठ दीन्यौ राणी!'
कह एड़ लगाई घोड़ी कै, रण बीच भयंकर हुयौ नाद।
केहरी करी गर्जन भारी, अरि–गण रै ऊपर पड़ी गाज।

फिर कट्यौ सीस गळ में धार्‌यौ, बेणी री दो लट बांट बळी।
उन्मत्त बण्यौ फिर करद धार, असपत्त फौज नै खूब दळी।
सरदार विजय पाई रण में, सारी जगती बोली, 'जय हो!'
'रण–देवी हाड़ी राणी री, मां भारत री जय हो! जय हो!'

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

सैनाण=निसाण। हथळेवौ=ब्याव रौ अेक रिवाज, पाणिग्रहण। हिंगळू=सिंदूर। रखड़ी=माथै रौ आभूसण। बिछिया=पगां री आंगळियां रौ आभूसण। पोढणौ=सोवणौ। अधर=होठ। रण=जुद्ध। बिसराई=भूली, पांतरी। खड़ग=तलवार। केहरी=सिंघ। अरि–गण=सत्रु सेना। गाज=खींवती बीजळी सरीखी तलवार री चोट। करद=तलवार। जगती=संसार।

सवाल

विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. सलूम्बर ठिकाणै रा सिरदार हा–
   (अ) चूंडावत (ब) राणा चूंडा
   (स) हाड़ावत (द) राणा प्रताप
   ( )

2. मेघराज 'मुकुल' रौ जलम हुयौ–
   (अ) राजगढ में (ब) रामगढ में
   (स) हनुमानगढ में (द) रायगढ में
   ( )

3. दिनाजपुर कवि सम्मेलन में पैठ बणाई–
   (अ) चन्द्रसिंह (ब) सूर्यमल्ल
   (स) मेघराज 'मुकुल' (द) कानदान 'कल्पित'
   ( )

4. कुणसी पोथी मेघराज 'मुकुल' री नीं है–
   (अ) कोडमदे (ब) सैनाणी
   (स) डांफर (द) बसंत
   ( )

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. मेघराज 'मुकुल' रौ जलम कद हुयौ?
2. मेघराज 'मुकुल' कुण–कुणसी भासावां में काव्य सिरजण कर्‌यौ?
3. 'महलां में गूंज्यौ संखनाद।'' अठै संखनाद किण बात रौ प्रतीक है?
4. राणी चूंडावत नै कांई सैनाणी दी?
5. कवि 'मुकुल' री किणी दो पोथ्यां रा नांव बतावौ।
6. कवि 'मुकुल' किण–किण काव्य–रूपां में सिरजण कर्‌यौ?

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल–

1. मेघराज 'मुकुल' रै काव्य री खास विसेसतावां कांई है?
2. ''पति म्हारौ कोमल कूंपळ–सो'' में कुण–कुणसा अलंकार आया है?
3. ''पण बाज रही थी सहनाई, महलां में गूंज्यौ संखनाद'' ओळी रौ भाव–विस्तार करौ।
4. कवि मेघराज 'मुकुल' रै रचना–संसार री ओळख करावौ।
5. चूंडावत रण में जावण सूं क्यूं नटग्यौ?
6. चूंडावत री जुद्ध में नीं जावण री बात सुण'र राणी कांई कैयौ?
7. ''तूं भलौ पाठ दीन्यौ राणी।'' राणी, चूंडावत सिरदार नै कांई पाठ पढायौ?

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. ''मेघराज 'मुकुल' राजस्थानी भासा अर साहित्य–साधना नै अेक नूंवी पिछाण दी है।'' इण कथन री दीठ सूं कवि रै व्यक्तित्व अर कृतित्व रौ वरणन करौ।
2. ''सैनाणी कविता राजस्थानी काव्य–परम्परा रौ कीरत–थंभ है।'' इण कथन नै ध्यान में राखता थकां सैनाणी कविता रै भाव अर कलापख रौ खुलासौ करौ।
3. 'सैनाणी' कविता रौ सार आपरै सबदां में लिखौ।
4. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) 'आ बात उचित है कीं हद तक, ब्या' में भी चैन न ले पाऊं?
मेवाड़ भलां क्यूं हो न दास, हूं रण में लड़ण नहीं जाऊं।'
बोली छत्राणी, 'नाथ! आज थे मती पधारौ रण मांही।
तलवार बतादयौ, हूं जासूं, थे चूड़ौ पैर रैवौ घर मांही।'

(ब) पैल्यां कीं समझ नहीं आई, पागल सो बैठ्यौ रह्यौ मूर्ख।
पण बात समझ में जद आई, हो गया नैण इकदम्म सुर्ख।
बिजळी–सी चाली रग–रग में, वो धार कवच उतर्‌यो पोड़ी।
हुंकार 'बम बम महादेव', 'ठक–ठक–ठक ठपक' बढ़ी घोड़ी।

(स) आंख्यां सूं आंख मिळी छिण में, सरदार वीरता बिसराई।
सेवक नै भेज रावळै में, अन्तिम सैनाणी मंगवाई।
सेवक पहुंच्यो अन्तःपुर में, राणी सूं मांगी सैनाणी।
राणी सहमी फिर गरज उठी, बोली, 'कह दै मरगी राणी।'

(द) 'तूं भली सैनाणी दी राणी! है धन्य धन्य तूं छत्राणी।
हूं भूल चुक्यौ हौ रण–पथ नै, तूं भलौ पाठ दीन्यौ राणी!'
कह एड़ लगाई घोड़ी कै, रण बीच भयंकर हुयौ नाद।
केहरी करी गर्जन भारी, अरि–गण रै ऊपर पड़ी गाज।

काव्यांस
'लू' अर 'बादळी'

चन्द्रसिंह

कवि–परिचै

राजस्थानी प्रक्रति काव्य–परम्परा रा लूंठा कवि चन्द्रसिंह रौ जलम बीकानेर रै गांव बिरकाळी में वि.सं. 1969 में हुयौ। आपरा पिता ठाकुर खूमसिंहजी हा, पण पछै आप ठाकुर हरिसिंहजी रै खोळै आया। आपरौ लालन–पालन सामंती परिवेस में हुयौ, पण इण परिवेस रौ प्रभाव आपरै व्यक्तित्व माथै हावी नीं हुयौ। आपरी शिक्षा–दीक्षा बीकानेर में हुई। सामंती परिवेस सूं जुड्या रैवता थकां ई आप सामंतशाही रौ विरोध कर्‌यौ, जिणरौ दाखलौ वांरै स्कूली जीवण में छात्रसंघ रौ चुनाव 'बैलेट पेपर' सू करावण रै रूप में देख्यौ जा सकै। इस्कूली भणाई नोबल इस्कूल, बीकानेर अर कॉलेज शिक्षा, डूंगर कॉलेज बीकानेर सूं पूरी हुयी। आपरा साथी–सायनां में सूर्यकरण पारीक, मुरलीधर व्यास, ठा. रामसिंह अर रावत सारस्वत कैया जा सकै। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी यूं तौ आपरा गुरु हा, पण सिरजण धारा में वै आपरा खरा मित्र अर मारग–दरसक रैया। कवि चन्द्रसिंह अनुसासित अर ठीमर व्यक्तित्व रा धणी रैया। वांरौ राजस्थानी कांनी सनेव घणौ गैरौ रैयौ। प्रक्रति कांनी भी वांरौ झुकाव घणौ गैरौ रैयौ, इणी कारण वै बर्न्स, कीट्स, वर्ड्स वर्थ, सैली, टैनीसन अर भारतीय कवियां में सुमित्रानंदन पंत री काव्य रचनावां री खास भणाई करी। वै काव्य में बुद्धि तत्त्व नै कदैई महत्त्व नीं दियौ। वै काव्य नै कदैई विचारधारा रै प्रचार–प्रसार रौ साधन नीं मान्यौ। कवि चन्द्रसिंह कविता नै कदैई मंच सूं कोनी जोड़ी। वांरौ मानणौ हौ कै कविता नै समझण री जरुरत है। वांरी रचनावां इण भांत रैयी है– 1.बाळसाद 2. कै मुकरणी 3. सांझ 4. बादळी 5. लू 6. मरुमहिमा 7. डांफर। राजस्थानी प्रकृति काव्य–परम्परा रा चावा रचनाकार चन्द्रसिंह री जीवण जात्रा 1996 ई. में संपूरण हुयी।

पाठ–परिचै

लू : राजस्थानी प्रक्रति काव्य–परम्परा रा चावा कवि चन्द्रसिंह आपरी काव्य–साधना में राजस्थानी प्रक्रति रै महताऊ पख में 'लू' नै कियां भुला सकता हा। इणी वास्तै वै 'लू' नै आधार बणाय आपरी रचना करी। 'लू' रै तीखास रौ प्रक्रति, जीव–जिनावर अर मिनखाजूण माथै कांई असर हुवै, इणरौ रूपाळौ चितरांम मांड्यौ है। 'लू' अेक कांनी प्रक्रति रै फूठरापै रौ विनास करै, तौ दूजी कांनी बादळ्यां नै जलम ई देवै। इण वास्तै मरुधरा उण लूवां नै घणौ लडावै। कवि इण भाव नै घणै फूठरापै साथै मांड्यौ है–

''जीवण दाता बादळ्यां, थांसूं जीवण पाय।
भल लूवां बाजौ कित्ती, मुरधर सहसी लाय।।''

बादळी : मरुधर प्रदेस राजस्थान रै वास्तै बादळ्यां रौ घणौ महत्त्व है। बादळ्यां अठै जीवणदाता मानीजी है। 'बादळ्यां' मरु प्रदेश रै वास्तै नूंवौ जीवण लेय'र आवै। 'बादळ्यां' आयां घणौ हरख हुवै। प्रकृति, जीवाजूण अर मानखै रै जीवण में बादळी नूंवी ल्हैर लेय'र आवै। इणी आणंद रौ वरणाव कवि इण रचना में कर्‌यौ है। अठै 'बादळी' नायिका है, जिकी कदैई सूरज सारू सजै–संवरै तौ कदैई पवन रै साथै रमै। आं दोनूं रचनावां में उपमा, रूपक अनुप्रास, उत्प्रेक्षा अलंकार अर राजस्थानी अलंकार वैणसगाई रौ खास बरताव हुयौ है।

लू

कोमल कोमल पांखड़्यां, कोमल कोमल पान।
कोमल कोमल बेलड़्यां, राख्या लूआं ध्यान।।

काची कूंपळ फूल फळ, फूटी सा बणराय।
बाड़ी भरी बसंत री, लूटी लूआं आय।।

पोखी कळियां प्यार सूं, भर–भर आस अटूट।
बिलखै सारी बेलड़्यां, लूआं लीधी लूट।।

नान्हा–नान्हा फूलड़ा, मोटा–मोटा फूल।
काची कळियां रोसियां, कीधी आ के भूल।।

चूण लेण रै चाव में, चिड़ियां खोलै चांच।
भीतर सारौ भूंजवै, लूआं अकरी आंच।।

अिमि सूकी आंख्यां मिची, हिरण्यां रुकी पुकार।
लाग लपेटै लू तणै, प्राणां लीध उडार।।

छप्पर ओरां छांह में, कर–कर पूळो ओट।
घणी जुगत राखै धणी, लुआं न चूकै चोट।।

⌘⌘

बादळी

जीवण नै सह तरसिया, बंजड़ झंखड़ बाढ।
बरस अे भोळी बादळी, आयौ आज आसाढ।।

छिनेक सूरज निखरियौ, बिखरी बादळियांह।
चिलकण मुंह अब लागियौ, धरा किरण मिलियांह।।

पहरै बदळै बादळी, बदळ पहर बदळाय।
सूरज साजन नै सखी, आसी कुणसौ दाय।।

दूर खितिज पर बादळ्यां, च्यारूं दिस में गाज।
जाणै कम्मर बांधली, आभै बरसण आज।।

मीठा बोलै मोरिया, डूंगा–टोकां गाज।
पल–पल साजन संभरै, इसड़ी बेळा आज।।

आज कळायण ऊमटी, छोड खूब हळूस।
सौ सौ कोसां बरससी, करसी काळ विधूंस।।

टप–टप चूवै आसरा, टप–टप विरही नैण।
झप–झप पळका बीज रा, झप–झप हिवड़ौ सैण।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

सह=सगळा, सारा। बंजड़=बंजर धरती। झंखड़=झाड़–झंखाड़। बाढ=झाड़ी, खेतां री बाड़। दाय=पसंद। खितिज=जठै आभौ अर धरती भेळा हुंवता दीसै। आभौ=आकास। कळायण=काळै बादळां री घटा। विधूंस=खतम, विणास। पान=पत्ता। बिलखै=विलाप करै। चूण=आटौ। कीधी=करी। हळूस=उल्लास साथै, आपौ छोड'र।

सवाल

विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'लू' अर 'बादळी' काव्य कृतियां रा रचनाकार है–
   (अ) कन्हैयालाल सेठिया (ब) मेघराज मुकुल
   (स) चन्द्रसिंह बिरकाळी (द) हनुमान दीक्षित
   ( )

2. 'लू' अर 'बादळी' किण भांत री काव्य–रचना है–
   (अ) प्रक्रति काव्य (ब) प्रगतिसील काव्य
   (स) वीर रसात्मक काव्य (द) व्यंग्यात्मक काव्य
   ( )

3. बसंत री बाड़ी नै लूटी–
   (अ) बादळी (ब) लूआं
   (स) भतूळियौ (द) ओस
   ( )

4. बादळी में साजन बतायौ है–
   (अ) चांद नै (ब) बिरखा नै
   (स) धरती नै (द) सूरज नै
   ( )

5. पहरै–बदळै बादळी मांय कुणसौ अलंकार है–
   (अ) वैणसगाई (ब) स्लेस
   (स) अनुप्रास (द) रूपक

( )

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. चन्द्रसिंह रौ जलम कठै हुयौ?
2. चन्द्रसिंह री खास दोय कवितावां कुणसी है?
3. जीवण नै कुण–कुण तरस रैया है?
4. 'बदळ–पहर बदळाय' मांय कुणसौ अलंकार है?
5. 'लाग लपेटै लू तणै' मांय कुणसौ अलंकार है?
6. लूआं सूं किणरौ ध्यान राखणै री अरज करीजी है?
7. 'बरस अे भोळी बादळी' कवि बादळी नै भोळी क्यूं बताई है?

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. चन्द्रसिंह बिरकाळी री रचित कृतियां रा नांव लिखौ।
2. 'बादळी' अर 'लू' किण भांत रा काव्य है? सार रूप में समझावौ।
3. चन्द्रसिंह बिरकाळी प्रकृति रौ मानवीकरण किण भांत कर्‌यौ है? समझावौ।
4. बादळी किणरै मन भांवतौ बणाव, कियां अर किण भांत करै? समझावौ।
5. कवि 'लू' सूं कांई अरज करी है?
6. 'बिलखै सारी बेलड़्यां लूआं लीधी लूट' पंक्ति रौ भाव सारांस बतावौ।

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'लू' अर 'बादळी' रै आधार माथै सिद्ध करौ कै चन्द्रसिंह बिरकाळी मरु–प्रक्रति रा चितेरा है।
2. बादळी काव्य रौ भावपख अर कलापख समझावौ।
3. 'लू' काव्य रौ सार लिखौ।
4. नीचै दिरीज्या दूहां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) काची कूंपळ फूल फळ, फूटी सा बणराय।
बाड़ी भरी बसंत री, लूटी लूआं आय।।

(ब) नान्हा–नान्हा फूलड़ा, मोटा–मोटा फूल।
काची कळियां रोसियां, कीधी आ के भूल।।

(स) आज कळायण ऊमटी, छोड खूब हळूस।
सौ सौ कोसां बरससी, करसी काळ विधूंस।।

काव्यांस
दुर्गादास

डॉ. नारायण सिंह भाटी

कवि–परिचै

आधुनिक राजस्थानी काव्य में महताऊ रचनावां सूं साहित्य–सेवा करण वाळा कवि डॉ. नारायण सिंह भाटी रौ जनम जोधपुर जिला रै मालूंगा गांव में 7 अगस्त, 1930 नै हुयौ। आपरै पिता रौ नाम कानसिंह भाटी हो। आपरी औपचारिक भणाई री सरुआत मालूंगा गांव सूं हुई। इणरै पछै आप चौपासनी स्कूल में पढ्या और अेम.अे. अेलअेल.बी. तांई री भणाई अेस.अेम.के. कालेज जोधपुर सूं प्राप्त करी। इण भणाई रै पछै आप वकालात सरू करी, पण कवि–मन वकालात में कद लागण वाळौ हौ। वै वकालात छोड दी। जद जोधपुर रै चौपासनी शिक्षण संस्थान में राजस्थानी सोध संस्थान री थरपणा हुई, तौ आप इण रा पैलड़ा निदेसक बण्या। अेलअेल.बी. कर्‌यां पछै भी आपरौ झुकाव तौ साहित्य अर इतिहास कांनी हौ, इण वास्तै औ फरज आप बौत आछै ढंग सूं निभायौ। इण संस्थान सूं भासा, साहित्य अर इतिहास रा जिका ग्रंथ प्रकाशित हुया वै सगळा ग्रंथ आपरी पिंडताई रा परमांण है। जूना ग्रंथां रौ ई आप गैरौ अध्ययन कर्‌यौ। राजस्थानी सोध संस्थान कांनी सूं छपण वाळी सोध पत्रिका 'परम्परा' रौ आप सम्पादन कर्‌यौ। आपरै सम्पादन में इण पत्रिका रा लगैटगै 100 अंक छप्या। परम्परा रा सगळा अंक न्यारा–न्यारा विसयां अर न्यारी–न्यारी दीठ नै लियां रैया है। इणरै साथै 'मारवाड़ रा परगनां री विगत', 'महाराजा मानसिंह री ख्यात', 'तखतसिंह री ख्यात' ग्रंथ आपरी संपादन–कला रा ठावा दाखला कैया जाय सकै। राजस्थानी सोध संस्थान रा निदेसक रैवतां इतियास अर सोध री सेवा करतां भी आप–आपरी मूल कविता–धारां सूं न्यारा नीं हुया। वै सगळा फरज निभाया, पण कवि री भूमिका नै नीं भूल सक्या। इणी कारणै वै केई काव्य–रचनावां री रचना कर सक्या। वै सगळी रचनावां आपरै काव्य–कौसल री साख भरै।

आपरी खास काव्य–पोथ्यां इण भांत है– 1. ओळूं 2. सांझ 3. मेघदूत (अनुवाद) 4. जीवणधन 5. परमवीर 6. दुर्गादास 7. कळप 8. मीरां 9. बरसां रा डिगोड़ा डूंगर लांघिया 10. मिनख नै समझावणौ दोरौ 11. पतियारौ।

भासा अर सैली री दीठ सूं कवि नारायण सिंह भाटी आपरी नूंवी शैली बणायी, जिणमें डिंगळ सैली रौ प्रवाह अर सबदां रौ वरताव प्रयोग खास कैयौ जाय सकै। आपरी भासा में राजस्थानी रौ रूपाळपण है। कवि आपरै भावां नै सांम्ही लावणं में आगत नीं करी, सबद खुद आगै होय'र कवि रा भावां नै सांम्ही लावता चितरांम मांडता–सा लागता रैया है। आधुनिक राजस्थानी कविता रौ औ सपूत 18 अप्रेल, 1994 नै औ लोक छोड परलोक कांनी गयौ परौ। आज कवि तौ नीं, पण उणरी रचनावां उणरै व्यक्तित्व अर कृतित्व री साख भरै।

पाठ–परिचै

मारवाड़ रै इतिहास में वीरवर दुर्गादास रौ नाम किणी सूं छानौ नीं है। मारवाड़ रा महाराजा जसवंतसिंह रा विस्वासपात्र सेवक अर महाराजा अजीतसिंह रै जीवण री रिच्छा करण वाळा इण

देसभक्त रौ जीवण मारवाड़ रै खातर अरपण रैयौ। इणरी धाक सूं ईज औरंगजेब री कुदीठ सूं मारवाड़ बच्यौ रैय सक्यौ, पण वीरवर दुर्गादास रै साथै कीं अैड़ी परिस्थितियां आयगी कै वांनै मारवाड़ रौ त्याग करणौ पड़्यौ। वै हरमेस धोळै घोड़ै रा असवार रैया। वांरा बागा ई धोळा ईज रैया। वांरी कीरत ई ऊजळी रैयी। वीर दुर्गादास आपरी वीरता री मरजाद नै कदैई तोड़ी नीं। चायै खुद कितरा ई दुख देख्या, पण मायड़ भोम री सींव नै आंच नीं आवण दी। दुर्गादास रै इणी ऊजळ चरित्र अर उणरी ऊजळ कीरत–गाथा रै रूप में आ कविता कवि नारायणसिंह भाटी मांडी है।

दुर्गादास

अस रा असवार ऊजळा,
रह्यौ ऊजळै वागां
ऊजळी खागां
ऊजळै मनां
राखियौ खत ऊजळौ,
पण असल रंगरेज आसरा
थें रंगियौ कसूंबल धरा–पोमचौ–
बिनां कर रंगियां।।

थें करी असांयत आसरा!
थिर सांयत थावा सारू,
थारी बाढ़ाळी खळकाया–
रगत–वा'ळा,
करुण आंखियां ढळता–
अरुण–आंसू ढाबवा सारू।।

भाखरां भटकियौ,
न अटकियौ खाळां–वा'ळां,
पलक न विखौ जेण उर खटकियौ
निरासा ची रोही में ऊभौ जाण हेकलौ–
भालाळै किण दिन कर भटकियौ?
रुकियौ न रोक्यौ गज–जूथां,
बाढ़तौ बिखा,
औरंग–सेन–वनां,
करोत ज्यूं करणौत पार व्हेगौ।।

अस चढणा!
हेकलौ प्रण पाळ चढ्यौ,
लियण घण मूंगी रतन–धरा।
सैलां झकझोळियौ अरियां समंद,
ढळी ऊमरां,
अस ढळिया,
पण अस रौ असवार नंह ढळियौ।।

भुरजाळा!
व्है मतवाळौ मेघ मालियौ–
नौ कूंटी मरुधरा धरा,
आवा न दीधौ आंच मां–भोम नै
कीनी छांवळ लाज खेतां,
वचन डूंगरां,
खिंवियौ बीच खागां–
खळ–दळां।
सेवट बरसियौ बोह जस मोतियां।।
⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

अस=घोड़ौ। ऊजळै=ऊजळौ, धोळौ। वागां=पौसाक। खागां=तलवार। कसूंबल=लाल। बाढाळी=तलवार। अरुण=लाल। ढाबवा=रोकणै। भाखरां=पहाड़ां। रोही=जंगळ। ऊभौ=खड़्यौ। बिखा=दुख। गज जूथां=हाथियां रा झुंड। सैलां=भालां। झकझोळिया=मथिया। अरियां=दुस्मणां। समंद=समदर। भुरजाळा=दुरग रा रुखाळा। खिंबियौ=चमक्यौ। खागां=तलवारां।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'दुर्गादास' पोथी रा रचनाकार है–
   (अ) कल्याण सिंह राजावत (ब) नारायण सिंह भाटी
   (स) कन्हैयालाल सेठिया (द) सूर्यमल्ल मीसण
   ( )
2. 'दुर्गादास' पोथी रा पठित छंदां रौ खास रस है–
   (अ) सिणगार रस (ब) वीर रस
   (स) वीभत्स रस (द) वात्सल्य रस
   ( )
3. दुर्गादास किण महाराजा रा विस्वासपात्र हा–
   (अ) मानसिंह (ब) जसवन्तसिंह
   (स) तखतसिंह (द) विजयसिंह
   ( )
4. आं मांय सूं किसी पोथी नारायणसिंह भाटी री कोनी–
   (अ) दुर्गादास (ब) सांझ
   (स) मानखौ (द) ओळूं
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'दुर्गादास' रचना किण कवि री सिरजणा है?
2. दुर्गादास किणां रा प्राणां री रिच्छा करी ही?
3. डॉ. नारायण सिंह भाटी किण संस्था रा निदेसक हा?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. डॉ. नारायण सिंह भाटी री पोथियां रा नांव बतावौ।
2. डॉ. नारायण सिंह भाटी रै सम्पादन में छपी सोध पत्रिका रौ नांव अर उणरी विसेसतावां बतावौ।
3. दुर्गादास रौ नांव इतिहास में चावौ क्यूं है?
4. नारायण सिंह भाटी रौ राजस्थानी कविता रै लेखण में कांई योगदान है?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी साहित्य अर इतिहास रा ग्रंथ–लेखण में डॉ. नारायण सिंह भाटी रौ कांई योगदान है?
2. दुर्गादास रै चरित्र रा गुण बतावौ ?

3. मारवाड़ रै इतिहास में दुर्गादास रै योगदान नै समझावौ।
4. अजीतसिंह रा प्राणां री रिच्छा रै वास्तै वीर दुर्गादास कांई कदम उठायौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) थें करी असांयत आसरा।
थिर सांयत थापवा सारू,
थारी बाढ़ाळी खळकाया
रगत–वा'ळा,
करुण आंखियां ढळता–
अरुण–आंसू ढाबवा सारू।।

(ब) भुरजाळा!
व्है मतवाळौ मेघ मालियौ–
नौ कूंटी मरुधरा धरा,
आवा न दीधी आंच मां–भोम नै
कीनी छांवळ लाज खेतां,
वचन डूंगरां,
खिंवियौ बीच खागां–
खळ–दळां।
सेवट बरसियौ बोह जस मोतियां।।